बी.एस.ओ.सी.-110 : सामाजिक स्तरीकरण
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-110**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -110 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. सामाजिक स्तरीकरण के द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए। 20

2. सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार क्या हैं? चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. जाति के अंतःक्रियात्मक और गुणात्मक सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत करें। 10

4. प्रजाति (Race) तथा नृजातीयता के बीच के संबंध की चर्चा कीजिए। 10

5. सांस्कृतिक और सामाजिक पुनरुत्पादन पर चर्चा करें। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. जाति व्यवस्था 06

7. प्रस्थिति (Status) 06

8. क्षैतिज गतिशीलता 06

9. सामाजिक स्तरीकरण पर बेबेरियन सिद्धान्त 06

10. समाजीकरण की प्रक्रिया 06

1. सामाजिक स्तरीकरण के द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर

सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी समाज में व्यक्तियों और समूहों को संपत्ति, सत्ता, प्रतिष्ठा और अवसरों के आधार पर असमान स्तरों में व्यवस्थित किया जाता है। द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण इस असमानता को केवल सामाजिक भूमिकाओं का वितरण नहीं मानता, बल्कि परस्पर विरोधी हितों, संसाधनों पर नियंत्रण और ऐतिहासिक संघर्षों का परिणाम समझता है। इसमें सामाजिक व्यवस्था को स्थिर या सदैव सहमति-आधारित मानने के बजाय परिवर्तनशील तथा अंतर्विरोधों से भरी व्यवस्था माना जाता है। कार्ल मार्क्स का वर्ग-संघर्ष सिद्धांत इसका प्रमुख आधार है।

द्वंद्वात्मकता का आधार

द्वंद्वात्मक सोच के अनुसार समाज में शक्तियाँ और हित एक-दूसरे से जुड़ते भी हैं तथा टकराते भी हैं। उत्पादन का प्रत्येक ऐतिहासिक ढाँचा नए अवसरों के साथ नई असमानताएँ उत्पन्न करता है। एक समूह का लाभ कई बार दूसरे समूह के श्रम, संसाधन या अधिकार पर निर्भर होता है। इसलिए वर्गों के बीच संबंध केवल व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता नहीं, उत्पादन व्यवस्था में निहित संरचनात्मक संबंध है। किसी व्यवस्था के अंतर्विरोध बढ़ने पर संघर्ष, सुधार और कभी-कभी मौलिक सामाजिक परिवर्तन संभव हो जाता है।

ऐतिहासिक भौतिकवाद और उत्पादन-संबंध

मार्क्स के अनुसार सामाजिक जीवन की भौतिक परिस्थितियाँ, उत्पादन के साधन और उन पर स्वामित्व सामाजिक संबंधों को गहराई से प्रभावित करते हैं। भूमि, कारखाने, पूँजी और तकनीक को कौन नियंत्रित करता है, यह निर्धारित करता है कि किसे लाभ मिलेगा और किसे अपनी श्रम-शक्ति बेचनी पड़ेगी। प्राचीन दास-व्यवस्था, सामंतवाद और औद्योगिक पूँजीवाद में असमानता के रूप अलग रहे, पर प्रमुख वर्गों के आर्थिक हितों के बीच विरोध बना रहा। इसी कारण वर्ग-व्यवस्था को इतिहास से अलग करके नहीं समझा जा सकता।